

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, क्राइस्टोलॉजी, सत्र 7, आधुनिक क्राइस्टोलॉजी, भाग 2, बार्थ, बुल्टमैन, और पैननबर्ग

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन हैं जो क्राइस्टोलॉजी पर अपना शिक्षण दे रहे हैं। यह सत्र 7 है, आधुनिक क्राइस्टोलॉजी, भाग 2, कार्ल बार्थ, रुडोल्फ बुल्टमैन, और वोल्फहार्ट पैननबर्ग।

हम कार्ल बार्थ के व्यक्तित्व के साथ आधुनिक क्राइस्टोलॉजी का अपना अध्ययन जारी रखते हैं।

20वीं सदी में पश्चिमी धर्मशास्त्र में उनका प्रभाव बहुत ज़्यादा महसूस किया गया। उनके लिए, क्राइस्टोलॉजी का पूरा विषय धर्मशास्त्र के लिए केंद्रीय था, और पिछली सदी के उदार धर्मशास्त्र के प्रति सचेत प्रतिक्रिया में, जो उन्हें पढ़ाया गया था, उन्होंने मसीह के व्यक्तित्व पर पहली पाँच शताब्दियों के शास्त्रीय रूढ़िवादी कथनों की पुष्टि की। बार्थ को अपने समय के कुछ प्रमुख उदारवादियों के अधीन पढ़ाया गया था।

उन्होंने पादरी के रूप में सेवा की, और वह धर्मशास्त्र काम नहीं आया। इसलिए, उनके अपने शब्दों में, उन्होंने बाइबल की अजीब नई दुनिया की खोज की और उसका प्रचार करना शुरू कर दिया। बार्थ के बारे में मेरी प्रस्तुति काफी हद तक सकारात्मक होगी, लेकिन मेरा ऐसा मतलब नहीं है, मैं बार्थियन होने का दावा नहीं करता, और निश्चित रूप से समस्याएं हैं।

उदाहरण के लिए, एमिल ब्रूनर, जो मेरे डॉक्टरेट के व्यक्तियों में से एक थे, जिन्हें मैं बार्थ से बेहतर जानता हूँ, ने ऐतिहासिक पतन को अस्वीकार कर दिया, और इससे बहुत सारी समस्याएँ पैदा हुईं, और फिर भी उनका मानना था कि लोग वास्तव में पापी थे और उन्हें क्षमा किए जाने की आवश्यकता थी, और इस तरह की बातें। हालाँकि, बार्थ का धर्मग्रंथों का उपयोग उनके धर्मग्रंथों के सिद्धांत से भी बेहतर था। उन्होंने अचूकता जैसी किसी भी बात को स्वीकार नहीं किया।

और कुल मिलाकर एक और बड़ी समस्या है उनके धर्मशास्त्र की सार्वभौमिकता की ओर झुकाव। उन्होंने इसका खंडन किया, लेकिन कई लोगों ने निष्कर्ष निकाला है कि उनके खंडन के बावजूद भी यह उसी दिशा में जाता है। इसलिए, इन चेतावनियों के साथ, मैं सहमत हूँ।

उन्होंने मसीह के व्यक्तित्व पर पहली पाँच शताब्दियों के शास्त्रीय रूढ़िवादी कथनों की पुष्टि की। अपने लंबे करियर के दौरान, उन्होंने शास्त्रीय क्राइस्टोलॉजी का ईमानदारी से पालन किया, और जो बदलाव हुए वे उसी ढाँचे के भीतर थे, खासकर 1931 में एंसेलम के उनके अध्ययन के बाद, फेथ सीकिंग अंडरस्टैंडिंग, जिसका अंग्रेजी अनुवाद है। बार्थ व्यवस्थित धर्मशास्त्र की पूरी श्रृंखला की गहन क्राइस्टोलॉजिकल एकाग्रता पर अड़े हुए थे।

अपने प्रसिद्ध चर्च डॉगमैटिक्स के पहले खंड में, उन्होंने लिखा, उद्धरण, एक चर्च डॉगमैटिक्स को निश्चित रूप से, एक पूरे के रूप में और इसके सभी भागों में क्राइस्टोलॉजिकल रूप से निर्धारित

किया जाना चाहिए, जैसे कि निश्चित रूप से भगवान का प्रकट वचन, पवित्र शास्त्र द्वारा प्रमाणित, और चर्च द्वारा घोषित, इसका एकमात्र मानदंड है, और निश्चित रूप से यह प्रकट वचन यीशु मसीह के समान है। यदि डॉगमैटिक्स खुद को नहीं मान सकता है और खुद को मूल रूप से क्राइस्टोलॉजी के रूप में नहीं माना जा सकता है, तो यह निश्चित रूप से किसी विदेशी तरीके से हार गया है और पहले से ही चर्च डॉगमैटिक्स के रूप में अपना चरित्र खोने के कगार पर है। बार्थ के अनुसार, यीशु मसीह ईश्वर के सभी तरीकों और कार्यों की शुरुआत है।

सब कुछ ईश्वर द्वारा ईश्वर-मनुष्य यीशु मसीह के चुनाव से शुरू होता है। इस कारण से, बाकी सब कुछ यीशु मसीह के प्रकाश में देखा जाना चाहिए। मैं उनके धर्मशास्त्र के विभिन्न पहलुओं के बारे में सोचता रहता हूँ।

मेरी जानकारी के अनुसार, और मैंने चुनाव और स्वतंत्र इच्छा पर एक किताब लिखी है, वह चर्च के इतिहास में चुनाव को समझने वाले पहले व्यक्ति हैं, और अंत में, मैं इसे एक शानदार विफलता मानूंगा, क्योंकि हम दुनिया की नींव से पहले मसीह में चुने गए हैं, इफिसियों 1, क्योंकि बार्थ का मतलब है कि यीशु स्वयं सभी के लिए चुने हुए और निंदनीय व्यक्ति हैं। फिर से, यह सार्वभौमिकता की ओर झुकाव को दर्शाता है, और उसने इसे विशिष्ट रूप से सिखाया। उसने अपने पीछे आने वाले अन्य लोगों को प्रभावित किया, लेकिन यह इफिसियों 1 की शिक्षा नहीं है, यह है कि परमेश्वर ने लोगों को मसीह में शामिल होने की संभावना के साथ चुना है।

यह मसीह के चुनाव के बारे में बात नहीं करता है। वास्तव में, बार्थ ने मसीह को अपने विचारों का केंद्र बनाया, उन पर कई बार क्रिस्टोमोनिज्म का आरोप लगाया गया है, मसीह पर इस तरह जोर देने का कि उनके धर्मशास्त्र के अन्य पहलुओं से समझौता हो गया। यह सच है। जैसा कि मैंने कहा, मैंने ब्रूनर का अध्ययन किया, और ब्रूनर और बार्थ प्राकृतिक रहस्योद्घाटन और प्राकृतिक धर्मशास्त्र पर भिड़ गए।

दुर्भाग्य से ब्रूनर ने अस्पष्ट शब्दावली का इस्तेमाल किया, लेकिन बार्थ ने उन पर पूरी तरह से हमला किया। 40 और 50 के दशक में जर्मनी में धर्मशास्त्र में रुचि इतनी थी कि बार्थ ने नाइन, नो नामक एक पुस्तक लिखी, जो एमिल ब्रूनर को एक क्रोधित उत्तर था, और लोगों ने पुस्तक खरीदी। यह अविश्वसनीय था, लेकिन पीछे मुड़कर देखने पर और पूरी तस्वीर को देखते हुए, बार्थ द्वारा सृष्टि में ईश्वर के रहस्योद्घाटन को नकारना, क्योंकि उनका आग्रह था कि सभी रहस्योद्घाटन मसीह में हैं, पूरी तरह से गलत है।

भजन 19 और रोमियों 1 ऐसे मुख्य स्थान हैं जो सिखाते हैं कि परमेश्वर ने स्वयं को सृष्टि में प्रकट किया है। अब फिर से, मैंने कहा कि ब्रूनर ने दुर्भाग्यपूर्ण भाषा का इस्तेमाल किया, और उन्होंने एक प्राकृतिक धर्मशास्त्र के बारे में बात की जिसने बार्थ को परेशान कर दिया। यह एक प्राकृतिक या सामान्य रहस्योद्घाटन है।

यह सच है कि उद्धार न पाने वाले लोगों के पास प्राकृतिक धर्मशास्त्र हैं, लेकिन वे सभी पाप द्वारा विकृत हैं। वैसे भी, क्रिस्टोमोनिज्म के दावे में कुछ सच्चाई है। बार्थ ने मसीह को शास्त्रीय रूढ़िवादी धर्मशास्त्र के ढांचे में देखा।

बिना किसी हिचकिचाहट के, वह प्राचीन चर्च के क्राइस्टोलॉजी को स्वीकार करता है। केंद्रीय कथन, जो प्राचीन चर्च के क्राइस्टोलॉजी से एक उद्धरण है, यह है कि भगवान मनुष्य, यीशु मसीह, के साथ एक हो जाते हैं, जो वास्तव में भगवान और वास्तव में मनुष्य हैं, फिर से चर्च के सिद्धांत से उद्धृत करते हैं। जब उदारवादियों ने चाल्सेडन पर बौद्धिकता का आरोप लगाया, बाइबिल की शिक्षाओं को बदनाम करने के लिए बुद्धि पर जोर देने का, तो उन्होंने जवाब दिया, परिषद को बौद्धिकता के साथ दोषी नहीं ठहराया जा सकता है, क्योंकि मसीह के एक व्यक्ति में सच्चे ईश्वर और सच्चे मनुष्य की दो प्रकृतियों के बारे में बात करते हुए, इसका उद्देश्य रहस्योद्घाटन के रहस्य को सुलझाना नहीं था।

यही आरोप था। यह अटकलें लगाने और उस बात को सुलझाने की कोशिश कर रहा है जो हल नहीं हो सकती, बल्कि, यह रहस्य को समझता है और उसका सम्मान करता है, उद्धरण समाप्त। यही हमने चाल्सेडन को करते देखा।

इसने रहस्य की व्याख्या नहीं की, और क्योंकि इसने इसे पूरी तरह से नहीं समझाया, इसलिए आप इसे पूरी तरह से नहीं समझा सकते। इससे आलोचनाएँ हुईं, है न? लेकिन यहाँ, उन्होंने इसका बचाव किया, और यह देखना वाकई उत्साहजनक है। एक अन्य स्थान पर बार्थ ने कहा, कोई यह भी कह सकता है कि चाल्सीडॉन का सूत्र वास्तव में जॉन 1:14 की व्याख्या से कम नहीं है, शब्द देहधारी हुआ।

बार्थ ने तो यहां तक कि अवैयक्तिक मानव प्रकृति और मसीह की अवैयक्तिक मानव प्रकृति जैसे अमूर्त शब्दों का भी बचाव किया है। यानी, उन्होंने इस बात से इनकार किया कि अवतार के अलावा कोई मनुष्य, यीशु, नहीं था, और उन्होंने पुष्टि की कि मरियम के गर्भ में यीशु की मानवता की शुरुआत से ही, यह अवैयक्तिक नहीं था, बल्कि वर्जिन के गर्भ में लॉगोस के साथ मिलन के द्वारा अवैयक्तिक था। तो ये ईश्वरत्व की रक्षा करने और मसीह की मानवता की पुष्टि करने के तरीके हैं।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि बार्थ प्राचीन चर्च के क्राइस्टोलॉजी से पूरी तरह सहमत हैं। वास्तव में, उनके कारण, कई मंडलियों में प्राचीन क्राइस्टोलॉजी में रुचि और स्वीकृति का एक बड़ा पुनरुत्थान लंबे समय तक हुआ। बार्थ का अनुसरण करते हुए, कई लोग कुंवारी जन्म को भी स्वीकार करने के लिए तैयार थे।

मैं यहां तक कहता हूं क्योंकि उदारवाद में इस पर जबरदस्त हमले हुए हैं। उदाहरण के लिए, एमिल ब्रूनर ने मसीह के कुंवारी जन्म को नकार दिया। उन्होंने इसे न्यू टेस्टामेंट के पौराणिक हाशिये पर माना, और मैं कार्ल बार्थ को उद्धृत करता हूं, एमिल ब्रूनर का कुंवारी जन्म को नकारना एक बुरा काम है।

यह उनके पूरे धर्मशास्त्र को नकारात्मक प्रकाश में प्रस्तुत करता है। परमेश्वर ने हमारे प्रभु के जीवन की शुरुआत और अंत में संकेत-चिन्ह स्थापित किए हैं। एक है कुंवारी से जन्म, और दूसरा है खाली कब्र।

हम संकेत-चिन्हों को हिलाने की हिम्मत नहीं कर सकते। अपने हिस्से में, ब्रूनर को बार्थ द्वारा कुचला हुआ महसूस हुआ, जो एक दिग्गज बन गया था, और कुछ दुश्मनी थी, इसलिए एक समय पर ब्रूनर ने नासमझी में, बिना किसी संदेह के, नाइन, नो जैसी किताबें लिखने वाले बार्थ के कारण दर्द महसूस किया, और लोगों को पता था कि इसका क्या मतलब है, बार्थ को जर्मनी के धार्मिक तानाशाह के रूप में संदर्भित किया, हिटलर का संदर्भ और कहने के लिए एक भयानक बात। और फिर भी, क्या यह कुछ हद तक योग्य है? बार्थ वास्तव में एक बहुत मजबूत ग्राहक था।

बार्थ ने त्रिएकत्व के शास्त्रीय सिद्धांत को पूरे दिल से स्वीकार किया। यदि यीशु वास्तव में ईश्वर का प्रकटीकरण है, तो एक ईश्वर है जो उसमें प्रकट होता है, और यदि यीशु मसीह में और उसके माध्यम से ईश्वर का प्रकटीकरण वास्तव में प्रभावी होना है, तो ईश्वर को स्वयं इस प्रकटीकरण को मनुष्य पापी तक पहुँचाना होगा। वह जो कर रहा है वह मसीह से शुरू करना और त्रिएकत्व के सिद्धांत की पुष्टि करना है।

तीन बार परमेश्वर स्वयं ही अपने वचन का विषय है। वह प्रकटकर्ता है। वह पिता है। वह रहस्योद्घाटन है, वह पुत्र है।

वह प्रकट है, वह आत्मा है। इसका मतलब सिर्फ यह हो सकता है कि ईश्वर त्रिएक है, कि ईश्वर स्वयं, बार्थ को फिर से उद्धृत करते हुए, अखंड एकता है, फिर भी वह प्रकटकर्ता, रहस्योद्घाटन और प्रकटता के रूप में अखंड अंतर में भी मौजूद है। इससे आप समझ सकते हैं कि बार्थ अपनी खुद की शब्दावली का उपयोग करता है, लेकिन वह पुष्टि कर रहा है, और वह बहुत हद तक मसीह-केंद्रित है।

वह त्रिएकत्व के पारंपरिक सिद्धांत की पुष्टि कर रहे हैं। वास्तव में, उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि ईश्वर अपने अंतरतम अस्तित्व में त्रिएक है। आर्थिक त्रिएकत्व को स्वीकार करना पर्याप्त नहीं है।

आर्थिक त्रिमूर्ति वह त्रिमूर्ति है जो संसार में प्रकट होती है, कार्य करती है, इत्यादि। जैसा कि इफिसियों 1 में है, पिता चुनता है, पुत्र छुड़ाता है, और आत्मा विश्वासियों पर पिता की मुहर है, जो अंत तक उनके उद्धार की रक्षा करती है। यही आर्थिक त्रिमूर्ति है, गतिमान त्रिमूर्ति है, क्रियाशील त्रिमूर्ति है।

लेकिन बार्थ ने ऑन्टोलॉजिकल या आसन्न त्रिदेव को भी स्वीकार किया, अर्थात्, ईश्वर स्वयं में एक त्रिदेव है। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि बार्थ के लिए, ईसा मसीह की दिव्यता ईसाई धर्म के केंद्र में थी। वास्तव में, चर्च डोगमेटिक्स के पहले के खंडों में, मसीह की केंद्रीयता पर इतना जोर दिया गया कि बार्थ पर ईसा मसीह को ईश्वर के साथ इस हद तक पहचानने का आरोप लगाया गया कि उनकी मानवता पृष्ठभूमि में चली गई, और ईसा मसीह और ईश्वर के बीच किसी भी तरह के विरोध के लिए शायद ही कोई जगह बची हो।

निष्पक्षता से कहें तो यह शायद एक सच्ची आलोचना है, लेकिन समय के साथ उन्होंने इसे और भी संतुलित कर दिया। ईसाई चर्च ने हमेशा बेटे के मानवीय स्वभाव के बारे में ज़ोर देकर कुछ खतरों से बचा है। पिता और पुत्र के बीच कोई खास अंतर नहीं है।

यह कोई अंतर-त्रित्ववादी विरोधाभास या तनाव नहीं है, बल्कि पुत्र अपने मानवीय रूप में खुद को पिता के अधीन कर देता है। सुसमाचारों में यीशु के दुख को ईश्वर के कार्य के रूप में वर्णित किया गया है, जो मनुष्य के स्वतंत्र कार्य और पीड़ा के साथ मेल खाता है। लेकिन इस तरह से कि इस मानवीय कार्य और पीड़ा को ईश्वर के कार्य और इसलिए स्वयं ईश्वर के दुख के रूप में दर्शाया और समझा जाना चाहिए।

और इस तरह के बयान से ऐसा लगता है कि उन्होंने सीमा लांघ दी है और लगभग पैट्रिपैसियनवाद की शिक्षा दे रहे हैं, जिसका वे खंडन करते हैं, और फिर भी उन्हें इस तरह से अतिवादी बयान दिए गए हैं। बाद के वर्षों में, हम बार्थ की सोच में एक निश्चित बदलाव देखते हैं। वह अभी भी इस बात पर कायम है कि यीशु में जो रहस्योद्घाटन हुआ, उसमें ईश्वर ही वास्तविक विषय है, लेकिन अब यीशु पर अधिक जोर दिया जाता है, जो मानव जाति का सच्चा प्रतिनिधि है और जो, इस तरह, ईश्वर के मानवीय साथी के रूप में कार्य करता है।

यीशु मसीह ईश्वर के सच्चे साथी हैं, और केवल उनके माध्यम से ही अन्य सभी मनुष्य ईश्वर के साथी हो सकते हैं। जब बार्थ का प्रभाव अपने उच्चतम, चरम पर था, तो बहुत अधिक कट्टरपंथी प्रकृति के नए रुझान उभरे, जो पश्चिमी धर्मशास्त्र को एक ऐसे मार्ग पर ले जाने वाले थे जो प्राचीन चर्च की रूढ़िवादी स्थिति से बहुत दूर ले गया। अब हम इन्हीं की ओर मुड़ते हैं, और सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण हैं रुडोल्फ बुल्टमैन।

वह एक प्रतिभाशाली व्यक्ति थे और अध्ययन के कई क्षेत्रों, रूप आलोचना, बाइबिल धर्मशास्त्र के अग्रणी थे, उन्होंने इसी विषय पर एक पुस्तक लिखी थी। उन्होंने जॉन के सुसमाचार पर एक जबरदस्त टिप्पणी लिखी। यह व्याख्याशास्त्र के बारे में बहुत कुछ कहता है, और फिर भी नीचे से एक क्राइस्टोलॉजी ज़रूर है, लेकिन साथ ही कई, कई ईसाई सिद्धांतों का खंडन भी है।

मुझे याद है कि मैंने एक सेमिनरी क्लास में ग्रीक पाठ से 1 यूहन्ना 2 पढ़ाया था, जिसमें लिखा है, यूहन्ना अपने पाठकों से कहता है, तुम सब जानते हो कि तुम्हें किसी को सिखाने की ज़रूरत नहीं है, लेकिन परमेश्वर का अभिषेक, पवित्र आत्मा का संदर्भ, तुम्हें सिखाता है, और तुम सब कुछ जानते हो। इसका अर्थ यह है कि उन्हें निराश नहीं होना चाहिए क्योंकि झूठे शिक्षक जिन्होंने एक दोषपूर्ण क्राइस्टोलॉजी और नैतिकता के दृष्टिकोण को सिखाया था, उन्हें छोड़ दिया और उन्हें अस्वीकार कर दिया। उन्हें प्रभु और प्रेरितों और आत्मा पर भरोसा करना चाहिए और आगे बढ़ना चाहिए।

इस संबंध में, मुझे याद है कि कक्षा में छात्र हैरान थे। बुल्टमैन इतना कुछ कैसे जान सकता था और उसका इतना प्रभाव कैसे हो सकता था? क्या वह 1 यूहन्ना 2 के अर्थ में जानता है? क्या वह पिता और पुत्र को जानता है? और मैं दूसरों पर निर्णय देने में जल्दबाजी नहीं करता, ठीक है? लेकिन अगर वह इतना कुछ जानता था तो वह यह कैसे नहीं जान सकता था? और इसका उत्तर है, यह एक ऐसा ज्ञान है जिसे विश्वास के संदर्भ में कहा जाता है। और यहां तक कि एक छोटा बच्चा जो यीशु में विश्वास करता है, वह पिता और पुत्र को इस तरह से जानता है कि बुल्टमैन,

अवतार, मसीह के ईश्वरत्व, चमत्कारों, स्वर्ग और नरक, दूसरे आगमन में यीशु के पुनरुत्थान को नकारते हुए, उन्हें नहीं जानता था।

यह कितनी दुखद स्थिति है। लेकिन निश्चित रूप से 20वीं सदी के सबसे प्रभावशाली न्यू टेस्टामेंट विद्वान। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, एक बदलाव आया जब रुडोल्फ बुल्टमैन का मिथक-विखंडन कार्यक्रम और बाइबिल के संदेश की उनकी अस्तित्ववादी व्याख्या धार्मिक चर्चा का नया केंद्र बन गई।

बुल्टमैन के लिए, मसीह का क्रूस सभी धर्मशास्त्र का केंद्र था। लेकिन क्रूस और स्वयं यीशु के व्यक्तित्व के प्रति उनका दृष्टिकोण कम से कम दो तरीकों से बार्थ के दृष्टिकोण से निर्णायक रूप से भिन्न था। सबसे पहले, बुल्टमैन ने नए नियम को एक कट्टरपंथी, आलोचनात्मक दृष्टिकोण से देखा।

रूप-आलोचनात्मक स्कूल में से एक के रूप में, उनका मानना था कि नए नियम के लेखन तथात्मक इतिहास का वर्णन नहीं करते हैं, बल्कि वे प्रारंभिक ईसाई समुदायों के धर्मशास्त्र के उत्पाद हैं। मौखिक संचरण और नियमित उपदेश की प्रक्रिया में, यीशु के मूल इतिहास में सभी प्रकार के पौराणिक तत्व जोड़े गए। इसलिए, नया नियम इस तीन-मंजिला ब्रह्मांड को प्रस्तुत करता है जिसमें यहाँ भगवान और स्वर्गदूत हैं, यहाँ मानव जाति और जानवर हैं, और यहाँ शैतान और नरक हैं।

यह उनका दृष्टिकोण था। हम इसे स्वीकार नहीं कर सकते। और फिर भी, नए नियम का संदेश महत्वपूर्ण है।

इसलिए उन किंवदंतियों और उन अविश्वसनीय पौराणिक तत्वों को, सही शब्दों में, आधुनिक पुरुषों और महिलाओं के लिए संदेश को स्वादिष्ट और लागू करने योग्य और जीवन बदलने वाला बनाने के लिए मिथकों से मुक्त करने की आवश्यकता है। इसके अलावा, धार्मिक-ऐतिहासिक स्कूल के प्रतिनिधि के रूप में, बुल्टमैन ने नए नियम के संदेश और उस अवधि के गैर-ईसाई धर्मों के बीच एक करीबी रिश्ता भी देखा। मैं नए नियम के उनके धर्मशास्त्र को पढ़कर कुछ हद तक चौंक गया, और उन्होंने जॉन के धर्मशास्त्र के बारे में कई अच्छी बातें कहीं, इसी तरह पॉल के बारे में भी, और फिर जब उन्होंने उनकी समानता के बारे में बात की, तो वे सहमत हुए क्योंकि उन दोनों ने अपने विचार रहस्यमय धर्मों और प्रोटो-गनोस्टिसिज्म से प्राप्त किए थे।

मैं तो बस दंग रह गया। ईसाई धर्म से पहले का ज्ञानवाद, यही था, जिसका खंडन किया जा चुका है। यह दूसरी सदी की घटना है।

हमारे पास प्रथम यूहन्ना जैसी किसी चीज़ में कुछ आरंभिक रुझान हैं, लेकिन नहीं, ईसाई धर्म से पहले का कोई ज्ञानवाद नहीं है। इसलिए, उनकी पूर्वधारणाएँ थीं कि धर्म एक अर्थ में समान थे और उन्होंने उस तरह की चीज़ों में एक-दूसरे को प्रभावित किया। नए नियम की आदर्शता या रहस्योद्घाटन की धारणा बस अनुपस्थित है।

यहाँ, उन्होंने यीशु और उनकी मृत्यु और पुनरुत्थान की पौराणिक व्याख्याओं की पृष्ठभूमि पाई, जैसा कि न्यू टेस्टामेंट के लेखकों ने दिया है। बार्थ और बुल्टमैन के बीच दूसरा महत्वपूर्ण अंतर यह है कि बुल्टमैन ने यीशु और उनके कार्यों के बारे में न्यू टेस्टामेंट में कही गई सभी बातों को मानवशास्त्रीय श्रेणियों में अनुवाद करने की कोशिश की। बार-बार, मैं उनके लेखन में एक और तरीका खोजता रहा, यह एक विश्वासपूर्ण आत्म-समझ को व्यक्त करने का एक और तरीका है।

यह हमारे बारे में है। यह हमारे बारे में है। वास्तव में, वामपंथी कट्टरपंथी दार्शनिकों और नास्तिक दार्शनिकों ने कहा, रूडोल्फ, आप अच्छा कर रहे हैं।

आप बहुत बढ़िया हैं। आप अच्छा कर रहे हैं। आपने हाइडेगर के अस्तित्ववाद को आत्मसात कर लिया है और आप अच्छा कर रहे हैं।

अगर आप एक और बात को मिथक से मुक्त करते हैं, तो आप हमारे साथ हैं। लेकिन उन्होंने ईश्वर को पूरी तरह से मिथक से मुक्त करने से इनकार कर दिया। ओह, मेरा वचन।

यहाँ, हम युवा हाइडेगर के अस्तित्ववादी दर्शन के गहरे प्रभाव को देखते हैं जो बुल्टमैन पर पड़ा। बुल्टमैन के लिए, हमारा धार्मिक ज्ञान, साथ ही, खुद के बारे में ज्ञान है। वास्तव में, उनके एक छात्र ने ईश्वर को एक विश्वासपूर्ण आत्म-समझ के रूप में परिभाषित किया था।

पूरी बात अंदरूनी हो गई। यह अपमानजनक है। हम अपनी ठोस अस्तित्वगत स्थिति के संदर्भ के बिना ईश्वर के बारे में बात नहीं कर सकते।

यीशु मसीह के बारे में बोलते समय भी यही बात सच है। उसके बारे में भी हम बिना अपने बारे में बोले नहीं बोल सकते। इस अर्थ में, कोई यह कह सकता है कि सभी धार्मिक और क्राइस्टोलॉजिकल प्रवचन अपने आप में मानवशास्त्रीय प्रवचन हैं।

यह पॉल के धर्मशास्त्र के बारे में सच है, जो बुल्टमैन ने अपने थियोलॉजी ऑफ़ द न्यू टेस्टामेंट में उद्धृत किया है। मसीह के बारे में हर कथन मनुष्य के बारे में भी कथन है और इसके विपरीत भी। और पॉल का क्राइस्टोलॉजी एक साथ उद्धारशास्त्र है।

बुल्टमैन ने अपने पूरे दृष्टिकोण को 1941 के अपने प्रसिद्ध व्याख्यान, न्यू टेस्टामेंट एंड माइथोलॉजी में संक्षेपित किया, जिसमें उन्होंने मिथकों को मिटाने का अपना कार्यक्रम शुरू किया। उनका शुरुआती बिंदु यह विश्वास है कि न्यू टेस्टामेंट पौराणिक कथाओं से भरा हुआ है। सभी लेखकों ने प्राचीन विश्व चित्र के बारे में सोचा।

जैसा कि मैंने पहले ही कहा है, ब्रह्मांड को तीन मंजिला संरचना के रूप में देखा जाता है। हाँ, हाँ, भगवान स्वयं इस दुनिया के मामलों में लगातार हस्तक्षेप करते हैं और चमत्कारी घटनाओं को घटित करते हैं। वह इस पर विश्वास नहीं करते थे।

यह पौराणिक कथाओं का हिस्सा है। हालाँकि, यह सब आधुनिक मनुष्य के लिए पूरी तरह से अस्वीकार्य है। हम अब यीशु के संदेश को नए नियम में शाब्दिक अवतार, शाब्दिक चमत्कार, शाब्दिक प्रायश्चित के रूप में प्रस्तुत नहीं कर सकते।

मैंने सीमित नहीं कहा। मैंने शाब्दिक प्रायश्चित, शाब्दिक पुनरुत्थान और शाब्दिक स्वर्गारोहण कहा। ये सभी मामले संदेश के पौराणिक ढाँचे से संबंधित हैं।

संदेश को खोजने का एकमात्र तरीका नए नियम को पूरी तरह से और मौलिक रूप से मिथक-विहीन करना है। लेकिन क्या हम इस तरह से पुराने उदारवादियों की गलतियों में वापस नहीं जा रहे हैं? क्या उन्होंने भी ऐसा नहीं किया? बुल्टमैन को यहाँ समस्या का एहसास है, और फिर भी वह जोर देकर कहते हैं कि उनके मिथक-विहीन करने के कार्यक्रम और पुराने उदारवादियों के कार्यक्रम के बीच एक बुनियादी अंतर है। उनका अपना तरीका काफी अलग है।

यह बाइबिल की किंवदंतियों का उन्मूलन नहीं बल्कि पुनर्व्याख्या है। हमारा काम यह पता लगाना है कि लेखकों ने इन सभी मिथकों के माध्यम से कौन से धार्मिक अनुभव व्यक्त करने की कोशिश की। इस सवाल का जवाब मुश्किल नहीं है।

इन लोगों ने पाया कि नासरत के यीशु नामक व्यक्ति के क्रूस पर चढ़ने से उन्हें पाप की शक्ति से मुक्ति मिली थी। नासरत के यीशु नामक व्यक्ति पर ध्यान दें। वह ईश्वर-मनुष्य नहीं है।

उसी तरह, हमें यीशु के व्यक्तित्व को भी मिथक से मुक्त करना चाहिए। यह स्पष्ट है कि नया नियम यीशु की एक पौराणिक व्याख्या देता है। यह उन्हें एक पूर्व-अस्तित्व वाले अलौकिक व्यक्ति के रूप में बताता है जो धरती पर आया और एक चमत्कारी तरीके से पैदा हुआ।

मानव रूप में, उन्होंने दुनिया के पापों के लिए खुद को बलिदान कर दिया और क्रूस पर मर गए। तीन दिनों के बाद, वह फिर से जीवित हो गए और चमत्कारिक तरीके से स्वर्ग लौट आए। भविष्य में, वह स्वर्ग से धरती पर वापस आएंगे।

यह सब शुद्ध पौराणिक कथा है। यदि आप यीशु के बारे में सही समझ प्राप्त करना चाहते हैं, तो हमें इसे फिर से मानवशास्त्रीय अस्तित्वगत श्रेणियों में अनुवाद करना होगा। न्यू टेस्टामेंट के लेखक वास्तव में यीशु के ऐतिहासिक व्यक्तित्व और उनके जीवन की घटनाओं के अर्थ को व्यक्त करने के लिए उन्हें बार-बार उद्धृत करना चाहते थे।

उद्धरण समाप्त। वे यह कहना चाह रहे थे कि यीशु की छवि को केवल उनके आंतरिक-सांसारिक संदर्भ से नहीं समझा जा सकता। पौराणिक भाषा में, इसका मतलब है कि वे अनंत काल से आते हैं।

उसकी उत्पत्ति मानवीय और प्राकृतिक नहीं है। उद्धरण समाप्त करें। साधारण भाषा में, इसका वास्तविक अर्थ यह है।

इस व्यक्ति में, जो स्वयं एक साधारण व्यक्ति था, नीचे से क्राइस्टोलॉजी के बारे में बात करता था, उसके पिता और माता उसके समकालीनों के लिए अच्छी तरह से जाने जाते थे, ईश्वर का उद्धार मौजूद है। धर्मशास्त्रीय भाषा में, इसका अर्थ यह है। यह व्यक्ति महान युगांतिक घटना है जो हमें एक विश्वासपूर्ण आत्म-समझ तक ला सकती है।

नए दृष्टिकोण का अर्थ है बाइबिल के संदेश में बहुत बड़ा परिवर्तन। निस्संदेह, पोप मोटे के धर्मशास्त्र में कई बाइबिल संबंधी उद्देश्य मौजूद हैं, लेकिन यह भी स्पष्ट है कि उनका क्राइस्टोलॉजी पंथों से पूरी तरह अलग है। हरमन सासा ने एक बार इसे इस प्रकार तैयार किया था: व्यंग्य उचित है; मुझे खेद है।

यीशु मसीह पवित्र आत्मा द्वारा गर्भाधान नहीं किया गया था, वह वर्जिन मैरी से पैदा नहीं हुआ था। उसने कष्ट नहीं झेले; उसने पोंटियस पिलातुस के अधीन कष्ट झेले। उसे क्रूस पर चढ़ाया गया, मरा और दफनाया गया, लेकिन वह नर्क में नहीं उतरा, मृतकों में से फिर से नहीं जी उठा, स्वर्ग में नहीं चढ़ा, परमेश्वर पिता के दाहिने हाथ पर नहीं बैठा, और जीवितों और मृतकों का न्याय करने के लिए फिर से नहीं आया।

हम बस इतना ही कह सकते हैं कि किसी तरह उनमें, उद्धार की अंतिम घटना घटी। एक तथ्य जो उनके शिष्यों ने उनकी मृत्यु के कुछ समय बाद खोजा था, और इसे ही पुनरुत्थान के रूप में जाना जाता है। यह मेरे लिए एक दुखद तथ्य है कि 20वीं सदी में न्यू टेस्टामेंट के अध्ययन में यह सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति था।

और फिर भी पेंडुलम इतना आगे बढ़ चुका था कि उसे वापस लौटना ही था, और वह वापस लौट आया। लेकिन वहाँ जाने से पहले, जेएटी रॉबिन्सन कुछ हद तक मशहूर हैं। मैं उन्हें क्रम से नहीं जानता, और मैं हंस कुंग और कार्ल रहनर के बारे में बात करूँगा।

ईश्वर के प्रति उनकी ईमानदारी ने ब्रिटिश जनता को तब चौंका दिया जब उन्होंने वास्तव में मिथक-विरोधी कार्यक्रम का इस्तेमाल आम भाषा में किया। आधुनिक मनुष्य केवल एक ही वास्तविकता जानता है, अर्थात् यह ब्रह्मांड; ईश्वर के बारे में सोचने और बोलने का केवल एक ही तरीका है, उसके बाहर होने के संदर्भ में नहीं, बल्कि गहराई के संदर्भ में। ईश्वर हमारे अस्तित्व का आधार है।

वह वास्तव में स्वयं ही है। यह पॉल टिलिच के कट्टरपंथी क्राइस्टोलॉजी, धर्मशास्त्र जैसा लगता है। लेकिन यह भी अंत नहीं था।

अन्य लोग इससे भी आगे बढ़ गए और उन्होंने ईश्वर की मृत्यु के धर्मशास्त्र का प्रतिपादन किया, जिसका अर्थ था कि ईश्वर के बारे में पारंपरिक धारणाएँ भ्रामक थीं और उन्हें अस्वीकार किया जाना चाहिए। नए क्राइस्टोलॉजिकल संकेन्द्रण का संदर्भ आधुनिक मनुष्य की नास्तिकता है। ऑशविट्ज़ के बाद, आधुनिक मनुष्य अब ईश्वर में विश्वास नहीं करता, कम से कम पारंपरिक पश्चिमी आस्तिकता में तो नहीं।

वास्तव में, यह ईश्वर मर चुका है। मैं रॉबिन्सन की बात पर वापस आऊंगा, लेकिन ईश्वर के प्रति उनकी ईमानदारी ने अंग्रेजों को हिलाकर रख दिया और उनमें से कई लोगों को भ्रमित कर दिया और यहां तक कि उन लोगों को भी निराश कर दिया, जिन्हें लगा कि वे अब उस यीशु पर विश्वास नहीं कर सकते, जिसके बारे में उन्होंने संडे स्कूल में और एंग्लिकन प्रीलेट्स से सीखा था, जो ईश्वर के वचन का प्रचार करते थे। 20वीं सदी के उत्तरार्ध में दो महत्वपूर्ण व्यक्ति वोल्फहार्ट पैननबर्ग और जुर्गन मोल्टमैन थे।

पैननबर्ग ने अपनी प्रमुख रचना, जीसस, गॉड एंड मैन में कहा कि पद्धतिगत रूप से, हमें ऊपर से आने वाले क्राइस्टोलॉजी के बजाय नीचे से आने वाले क्राइस्टोलॉजी को प्राथमिकता देनी चाहिए। वह आधुनिक लोगों से संवाद करने की कोशिश कर रहे हैं। और इसीलिए मैंने पहले नीचे से आने वाले निरपेक्ष क्राइस्टोलॉजी और सापेक्ष क्राइस्टोलॉजी के बीच अंतर का इस्तेमाल किया था।

वह नीचे से शुरू करता है, लेकिन वह ऐतिहासिक रूप से खाली कब्र तक अपना रास्ता बनाता है, यीशु के कबूलनामे पर विश्वास करता है, और अवतार के पारंपरिक दृष्टिकोण की पुष्टि करता है। उसने नीचे से क्यों शुरू किया? ऐसा दृष्टिकोण यीशु की दिव्यता को पूर्व निर्धारित करता है। यह वास्तविक ऐतिहासिक व्यक्ति, नासरत के यीशु की विशिष्ट विशेषताओं को पहचानना मुश्किल बनाता है।

यह वस्तुतः ईश्वर के पुत्र के संसार में आने के तरीके पर ध्यान केन्द्रित करके ईश्वर की स्थिति को अपनाता है। ऊपर से दृष्टिकोण की इस अस्वीकृति का अर्थ यह नहीं है कि पैननबर्ग अवतार के विचार को पूरी तरह से खारिज कर देता है और वह क्राइस्टोलॉजी के अवतार को पूरी तरह से गलत मानता है। वास्तव में, वह स्वयं भी अवतार की अवधारणा को स्वीकार करता है, लेकिन वह इसे पारंपरिक क्राइस्टोलॉजी की एक गलती के रूप में देखता है कि इसने इस अवधारणा को क्राइस्टोलॉजी के लक्ष्य के बजाय एक प्रारंभिक बिंदु के रूप में लिया।

मैं तर्क दूंगा कि जॉन और पॉल ने इसे अपने शुरुआती बिंदु के रूप में लिया और हम भी ऐसा ही कर सकते हैं, हालांकि मैं पैननबर्ग के कई निष्कर्षों की सराहना करता हूं। पैननबर्ग का यह भी मानना है कि यीशु ईश्वर का पुत्र है, लेकिन इसे खोजने के लिए, हमें नीचे से शुरू करना होगा, यानी ऐतिहासिक यीशु से। लेकिन क्या हम वास्तव में इस गतिविधि और बुल्टमैन के खिलाफ यीशु के भाग्य को जान सकते हैं, जो बुल्टमैन के बाद के लोगों के साथ सहमत हैं, जिन्होंने उनके अत्यधिक संदेह पर प्रतिक्रिया व्यक्त की, पैननबर्ग का कहना है कि हम वास्तव में प्रेरितिक उपदेश, केरीग्मा, ऐतिहासिक यीशु के लिए उनके संदेश के पीछे जा सकते हैं?

सुसमाचारों से यह स्पष्ट है कि यीशु का तात्कालिक संदर्भ यहूदी सर्वनाश की अपेक्षा का था। यीशु ने मृतकों के सामान्य पुनरुत्थान, मनुष्य के स्वर्गीय पुत्र के प्रकट होने और अंतिम निर्णय की शुरुआत के साथ इतिहास के पूर्ण अंत की अपेक्षा की। अपने ढांचे के भीतर, यीशु ने लोगों को परमेश्वर के राज्य में बुलाने के अपने कार्य को पूरा किया जो उसके अंदर प्रकट हुआ था।

इन सब बातों से यह स्पष्ट है कि यीशु ने अधिकार का जबरदस्त दावा किया। उसने दावा किया कि वह परमेश्वर के अधिकार से बात कर रहा है। साथ ही, इस दावे की एक भविष्यसूचक संरचना भी थी।

इसके लिए भविष्य में परमेश्वर द्वारा स्वयं पुष्टि की आवश्यकता थी। यह उनके दृष्टिकोण की एक तरह की प्रतिभा थी। हालाँकि, यीशु की इस पुष्टि की उम्मीद एक बड़ी विफलता साबित हुई।

क्योंकि उसके अपने लोगों के नेताओं ने उसे रोमियों द्वारा विद्रोही करार देकर उसकी निंदा की और बाद में उसे मार डाला। वह क्रूस पर मर गया। लेकिन तीन दिन बाद, महान चमत्कार हुआ।

परमेश्वर ने उसे मृतकों में से जीवित किया और इस प्रकार उसे और उसके दावे को सही ठहराया। सच है, इतिहास का अंतिम अंत अभी नहीं आया था, लेकिन यीशु के पुनरुत्थान का अर्थ इस अंत की पूर्वानुमेय प्रत्याशा के अलावा और कुछ नहीं हो सकता। साथ ही, यह भी प्रकट हुआ कि यीशु वास्तव में कौन है।

पुनरुत्थान में, नीचे से क्राइस्टोलॉजी एक युगांतकारी क्राइस्टोलॉजी में जारी होती है जिसमें यह स्पष्ट हो जाता है कि, उद्धारण, इस आदमी के रूप में, इस विशेष ऐतिहासिक मिशन और इस विशेष भाग्य के साथ इस विशेष अनूठी स्थिति में एक आदमी के रूप में, इस आदमी के रूप में, यीशु सिर्फ आदमी नहीं है, बल्कि मृतकों में से उसके पुनरुत्थान के परिप्रेक्ष्य से, वह भगवान के साथ एक है और स्वयं भगवान है। यह पैनेनबर्ग का एक उद्धारण है। लेकिन क्या यह उस ऐतिहासिक यीशु के बारे में जो हम पढ़ते हैं, उसके साथ संघर्ष में नहीं है, जिसने खुद को पूरी तरह से पिता के अधीन माना? पैनेनबर्ग का जवाब है कि यह अधीनता, पीछे मुड़कर देखने पर, पिता के साथ एक पुत्र के रूप में यीशु की आवश्यक एकता की अभिव्यक्ति है।

पिता के प्रति पूर्णतः समर्पित होने के नाते, यीशु परमेश्वर की दिव्यता के प्रकटकर्ता हैं और परमेश्वर के सार से अविभाज्य रूप से संबंधित हैं। इस प्रकार, ईस्टर से पहले के अपने जीवन में ही, यीशु परमेश्वर के पुत्र थे, हालाँकि उन्हें अभी तक इस रूप में पहचाना नहीं जा सका था। हाँ, कुंवारी जन्म की किंवदंती पुष्टि करती है कि वह शुरू से ही परमेश्वर के पुत्र थे।

इससे भी बढ़कर, हम उनके पूर्व-अस्तित्व के बारे में बात कर सकते हैं। ईश्वर हमेशा यीशु के साथ एक था, यहाँ तक कि उनके सांसारिक जन्म से पहले भी। अंततः, हम यीशु के बारे में केवल अवतार के संदर्भ में ही बात कर सकते हैं।

अवतार की अवधारणा, भले ही हम इसे क्राइस्टोलॉजी में अपने शुरुआती बिंदु के रूप में नहीं ले सकते, फिर भी एक सत्य की पुष्टि करती है जिसे त्यागा नहीं जा सकता। ये सभी पैनेनबर्ग के उद्धारण हैं। यीशु में, ईश्वर स्वयं अपनी अन्यता से बाहर निकलकर हमारी दुनिया में, मानव रूप में, इस तरह से आए हैं कि पिता-पुत्र का रिश्ता, जैसा कि हम पीछे मुड़कर देखते हैं, हमेशा ईश्वर के सार का था, अब भौतिक रूप प्राप्त कर लिया है।

मैं त्रिएकत्व के सिद्धांत में भी कुछ ऐसा ही कहता हूँ। हम जानते हैं कि परमेश्वर हमेशा से पवित्र त्रिएकत्व के रूप में विद्यमान रहा है, लेकिन हमने इसे पुत्र के अवतार में सीखा। हम इसे पुराने नियम से नहीं सीखते।

ओह, आप प्रत्याशाएँ पा सकते हैं, ऐसा मुझे लगता है, लेकिन आप उन्हें यीशु के पुनरुत्थान से पीछे की ओर देखते हुए देखते हैं। इसलिए, यह अवतार में है कि हम समझते हैं कि ईश्वर एक में दो हैं। यह पेंटेकोस्ट में है कि हम समझते हैं कि ईश्वर एक में तीन हैं, और हम इसे सही ढंग से अनंत काल में वापस पढ़ते हैं, जो वास्तव में, कुछ नए नियम के कथनों पर आधारित है।

पैननबर्ग का दावा है कि, उद्धारण, यीशु ने अपने और पिता के बीच जो अंतर बनाए रखा, वह भी ईश्वर की त्रिमूर्ति से संबंधित है। इस प्रकार, पैननबर्ग का क्राइस्टोलॉजी नीचे से त्रिमूर्ति के पूर्ण विकसित सिद्धांत में निकलता है। लेकिन क्या इसका मतलब यह नहीं है कि, फिर से, यीशु की मानवता, सच्ची मानवता, सच्चे देवता द्वारा निगल ली गई है? पैननबर्ग 6वीं शताब्दी के बायज़ेंटियम के लियोन्टियस के सिद्धांत पर वापस जाते हैं, जो मसीह की अवैयक्तिक मानवता और अवैयक्तिक मानवता पर जोर देता है।

दूसरे शब्दों में कहें तो वह रूढ़िवादी है। लेकिन वह यह समझाने में जल्दबाजी करता है कि इसका मतलब यीशु को दो स्वभावों में विभाजित करना नहीं है। वह उस शब्दावली को स्वीकार नहीं करता।

बल्कि, वह दो पूरक पहलुओं की बात करता है। क्लॉस रूनिया मूल्यांकन करते हैं और कहते हैं, वास्तव में, पैननबर्ग के ये शब्द, जिन्हें मैं पढ़ने नहीं जा रहा हूँ, यह बहुत अधिक विस्तृत है, मसीह की अवैयक्तिक मानवता के प्राचीन सिद्धांत के अलावा और कुछ नहीं है। यानी, कोई मात्र मनुष्य नहीं था।

यीशु, परमेश्वर, आये और वास किया। और मसीह की अवैयक्तिक मानवता, अर्थात्, मरियम के गर्भ में उनकी मानवता की शुरुआत से ही, उनकी मानवता उनके गर्भ में पुत्र, या वचन के साथ मिलन द्वारा अवैयक्तिक थी। क्लॉस रूनिया द्वारा मूल्यांकन।

यह स्पष्ट है कि पैननबर्ग का क्राइस्टोलॉजी, हालांकि नीचे से शुरू होता है, यानी ऐतिहासिक यीशु से, पुनरुत्थान के निर्णायक बिंदु के माध्यम से, अंततः शास्त्रीय क्राइस्टोलॉजी के बहुत करीब आता है। यह सच हो सकता है कि वह दो प्रकृतियों के बारे में बात नहीं करना चाहता है और यीशु के अस्तित्व के दो पूरक कुल पहलुओं की अप्रत्यक्ष पहचान के बारे में बात करना पसंद करता है, लेकिन यह इस तथ्य को नहीं बदलता है कि उसका दृष्टिकोण चाल्सेडोनियन परंपरा का एक रूप है। पैननबर्ग के क्राइस्टोलॉजी का एक महत्वपूर्ण पहलू नीचे से एक क्राइस्टोलॉजी विकसित करने का उनका निर्णय है।

हमारा मानना है कि इस तरह के दृष्टिकोण के निश्चित लाभ हैं। एक बात यह है कि यह यीशु की ऐतिहासिकता को गंभीरता से लेता है। दूसरी बात यह है कि यह यीशु के जीवन और कार्य में एक महान मोड़ के रूप में उनके पुनरुत्थान को गंभीरता से लेता है।

साथ ही, हम इस तथ्य को नज़रअंदाज़ नहीं कर सकते कि पैननबर्ग ने यीशु के बारे में बाइबिल के डेटा के प्रति काफ़ी आलोचनात्मक रवैया अपनाया है और अक्सर विरोधाभासी साक्ष्य से छुटकारा पाने के लिए ऐतिहासिक-आलोचनात्मक पद्धति का उपयोग किया है। इस प्रकार, कुंवारी जन्म, जो नीचे से उनके दृष्टिकोण के साथ बहुत अच्छी तरह से फिट नहीं बैठता है, को एक किंवदंती करार दिया गया है। इसी तरह, यीशु की मसीहा और ईश्वर के पुत्र के रूप में आत्म-चेतना, जिसे सुसमाचारों में यीशु के लिए जिम्मेदार ठहराया गया है, को नकार दिया गया है।

क्लास रूनिया ने अपनी रणनीति के हिस्से के रूप में आधुनिक लोगों को संप्रेषित करने के लिए नीचे से क्राइस्टोलॉजी के पैननबर्ग के संस्करण के लिए कम से कम प्रशंसा व्यक्त की। उन्हें लगता है कि इसका कुछ मूल्य हो सकता है, हालांकि वे बाइबिल के साक्ष्य के हिस्से को अस्वीकार करने वाले पैननबर्ग की आलोचना करते हैं। लेकिन फिर वे कहते हैं, हालांकि, मेरा मानना है कि हम जो पॉल और जॉन के बाद जी रहे हैं, हमें नीचे से क्राइस्टोलॉजी को ऊपर से क्राइस्टोलॉजी द्वारा पूरक करना होगा।

मैं इस बात से दिल से सहमत हूँ। अंत में, पैननबर्ग का नीचे से क्राइस्टोलॉजी पर जोर देना भी वह कारण होना चाहिए जिसके कारण वह अंततः सभी मनुष्यों के एक युगांतिक एनहाइपोस्टेसिस पर पहुँचता है। यीशु में, ईश्वर का सार और मनुष्य का सार एकीकृत है।

पैननबर्ग कहते हैं कि यह यीशु के ऐतिहासिक जीवन की विशिष्टता में हुआ, लेकिन फिर वे तुरंत कहते हैं कि भविष्य में, यह एकीकरण सभी मानवीय वास्तविकता तक फैल जाएगा। कोई आश्चर्य करता है कि क्या इस तरह से, नीचे से क्राइस्टोलॉजी वास्तव में, सार्वभौमिकता में, मानव के देवत्व में नहीं आती है। बेशक, मैं इस बिंदु पर पैननबर्ग के साथ मुद्दा उठाता हूँ और वास्तव में, इसे अस्वीकार करता हूँ।

तो, यह एक मिश्रित मूल्यांकन है, लेकिन भले ही बार्थ पुराने उदारवादियों से बेहतर थे और बुल्टमैन में जबरदस्त गिरावट आई है, लेकिन बार्थ बहुत अधिक स्वीकार्य हैं, हालांकि पूरी तरह से रूढ़िवादी नहीं हैं। फिर भी, बुल्टमैन की तुलना में, पैननबर्ग बहुत बेहतर हैं और वास्तव में बुल्टमैन से बेहतर हैं, जिस पर हम अपने अगले व्याख्यान में लौटेंगे।

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन द्वारा क्राइस्टोलॉजी पर उनके शिक्षण में है। यह सत्र 7, आधुनिक क्राइस्टोलॉजी, भाग 2, कार्ल बार्थ, रुडोल्फ बुल्टमैन और वोल्फहार्ट पैननबर्ग है।